आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक: -प्रतिदिन

# मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2514 • उदयपुर, शुक्रवार 12 नवम्बर, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

## आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

### छिटकी जिन्दगी को लगे पंख

रोहित अहिरवार (25) मंडीदीप (भोपाल) में एक आर. ओ. प्लांट में करते हुए माता–पिता सहित 7 सदस्यों के परिवार में जीवन निर्वाह कर रहा था। 4 बहनों में दो का विवाह हो चुका था, जबकि दो की शादी शेष है। माता–पिता रामवती देवी–भैयालाल अहिरवार दोनो ही वृद्ध हैं। पिता परिवार पोषण में मदद के लिए मजदूरी करते हैं। गृहस्थी की गाड़ी ठीक से आगे बढ़ रही थी कि अचानक एक हादसे ने पूरे परिवार को अस्त–व्यस्त कर दिया। फरवरी 2020 की पहली तारीख को रोहित भैरोपुर स्थित घर से मंडीदीप जाने के लिए निकला। भोपाल से मंडीदीप जाने वाले निकटवर्ती स्टेशन पर पहुंचा और प्लेटफॉर्म के निकट खड़ा था। ट्रेन आने में कुछ ही मिनट शेष थे। तभी कोई व्यक्ति दौड़ता हुआ उसके पास से गुजरा और रोहित उसके धक्के से रेलवे ट्रेक पर जा गिरा। संयोगवश तभी ट्रेन धड़धड़ाते हुए आ पहुंची और उसके दोनों पांवों को चपेट में लेते हुए आगे बढ़ गईं दोनों पांव कट चुके थे। उसे तत्काल भोपाल के एक अस्पताल ले जाया गया जहां उसका इलाज चला। दोनों पांव कटने से परिवार पर संकट के बादल छा गए। परिवार आर्थिक संकट का सामना करने लगा। किसी ने कृत्रिम पांव लगवाने की सलाह भी दी लेकिन आर्थिक संकट के चलते रोहित के लिए यह नामुमकिन था। ठीक एक साल बाद भोपाल में 22 जनवरी2021 को नारायण सेवा संस्थान की कृत्रिम अंग वितरण शिविर लगा। प्रचार–प्रसार से रोहित को पता लगने पर वे भी शिविर में पहुंचे, जहां घुटनों से ऊपर तक कृत्रिम पांव बनाकर लगाए गए। रोहित अब चलते है और जल्दी ही उन्हें काम पर लौटने की उम्मीद हैं।

### राजश्री का मन राजी हुआ

मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल के निकटस्थ गांव नारियल खेड़ा निवासी राजश्री ठाकरे (21) का जन्म से ही दांया हाथ बिना पंजे के था। पिता दशरथ ठाकरे मजदूरी करके पांच सदस्यों के परिवार का पोषण कर रहे थे। सितम्बर 2019 में पिता का देहांत हो गया।

राजश्री ने एक कॉलेज से ग्रेजुएशन की डिग्री हासिल की। कृत्रिम पंजा अथवा हाथ लगाने के लिए भोपाल के एक बड़े अस्पताल से सम्पर्क भी किया लेकिन आर्थिक तंगी के चलते सम्भव नहीं हो पाया। राजश्री पार्ट टाइम नौकरी कर परिवार पोषण में मदद कर रही है।

भोपाल में 22 जनवरी 2021 को नारायण सेवा संस्थान के निःशुल्क कृत्रिम अंग शिविर में राजश्री ने भी पंजीयन करवाया। जहां संस्थान के ऑर्थोटिस्ट–प्रोस्थोटिस्ट ने इनके लिए पंजे सहित एक विशेष कृत्रिम हाथ तैयार किया। राजश्री इस हाथ से अब दैनन्दिन कार्य के साथ लिखने का काम भी आसानी से कर लेती है।

### कोरोना काल में निर्धन बच्चों को शिक्षा

कोरोना के कारण नन्हे–नन्हे बच्चों की शिक्षा और खेलों पर भी विपरीत असर पड़ रहा है, उससे कोई भी मुंह नहीं फेर सकता। फिर भी आपके अपने नारायण संस्थान ने गरीब बच्चों के बेहतर भविष्य की फिक्र करते हुए शिक्षकों के कठिन परिश्रम और सकारात्मक सोच ने नन्हें छात्रों को पढ़ाई से जोड़े रखने में उपयोगी कार्य किया है।

संस्थान ने मनोरंजन के साथ पढ़ाने की तकनीक विकसित की और संस्थान के अध्यापकों ने बच्चों को घर–घर जाकर पढ़ाया। कहीं–कहीं तीन–तीन, चार–चार बच्चों का ग्रुप बनाकर भी पढ़ाने का बखूबी कार्य किया गया। बच्चों के गरीब–मजदूर परिजनों के लिए शिक्षकों की ओर से हेल्पडिस्क स्थापित की गई है, जो 24 घंटे उन्हें सपोर्ट प्रदान करती है। बच्चों के गृह कार्य की कॉपी देखकर शिक्षकों को पूर्ण सन्तोष है। बच्चों के लिए की जा रही मेहनत अनुकूलित परिणाम ला रही है। वैसे विशेषज्ञों और शिक्षाविदों की मानें तो अभी कुछ वक्त और स्कूलों को खोलना उचित नहीं है। ऐसे में जैसा हम प्रयास कर रहे हैं, उसे जारी रखें। स्कूल खुलने पर तीन–तीन माह के अतिरिक्त सेशन चलाकर जरूरी कोर्स पूर्ण कराने की रुपरेखा तैयार की जा रही है।

### मूक बधिर–प्रज्ञाचक्षु बच्चों की शिक्षा

दिव्यांगता की विभिन्न श्रेणियों के क्षेत्र में सेवा करने के जुनून के साथ नारायण सेवा संस्थान ने वर्ष 2016 में गूंगे, बहरे और मानसिक विकृत बच्चों के लिए आवासीय विद्यालय की स्थापना की। वर्तमान में आवासीय विद्यालय में 82 मूकबधिर, प्रज्ञाचक्षु और मानसिक विमंदित बच्चे अध्ययनरत हैं।

इन बच्चों का बेहतर जीवन और भविष्य निर्माण करने के लिए संस्थान कटिबद्ध है। इस विद्यालय को सुचारू संचालित करने के लिए 25 सेवाभावी साधक समर्पित भाव से लगे हैं। ये दिव्यांग बच्चे इस विद्यालय से शिक्षित तो हो ही रहे हैं, साथ ही विभिन्न खेलों में प्रशिक्षित भी हो रहे हैं। इन बच्चों की उत्तम परवरिश की दृष्टि से अति–आधुनिक आवास–निवास व्यवस्था के साथ स्वास्थ्यवर्द्धक आहार भी उपलब्ध कराया जा रहा है। इन बच्चों की मुस्कराहट देखकर संस्थान में आने वाले अतिथिजन आनन्दित हो जाते हैं। यह विद्यालय राजस्थान सरकार के विशेष योग्यजन निदेशालय के सहयोग से संचालित है। इन बच्चों की कोरोनाकाल में भी अच्छे–से देखभाल हुई। संस्थान साधको ने इनके प्रति अपनी जिम्मेदारी को बखूबी निभाया।

## अंतहीन संभावनायें – दिव्यांगता मिटाने के लिये विभिन्नआयाम
## WORLD OF HUMANITY का निर्माण प्रगति पर.....

# अंतहीन संभावनाएं - दिव्यांगता मिटाने के विभिन्न आयाम

### चिकित्सा
- निदान (एक्स रे, ओपीडी, लैब)
- उपचार (कृत्रिम अंग और कैलीपर्स)
- पोस्ट ऑपरेटिव केयर (वार्ड, आईसीयू)
- चिकित्सा सहायता (फार्मेसी एवं फिजियोथेरेपी)

### स्वावलम्बन
- हस्तकला या शिल्पकला
- सिलाई प्रशिक्षण
- डिजिटल (कंप्यूटर) प्रशिक्षण
- मोबाइल फोन मरम्मत प्रशिक्षण
- नारायण चिल्ड्रन एकेडमी (निःशुल्क डिजीटल स्कूल)

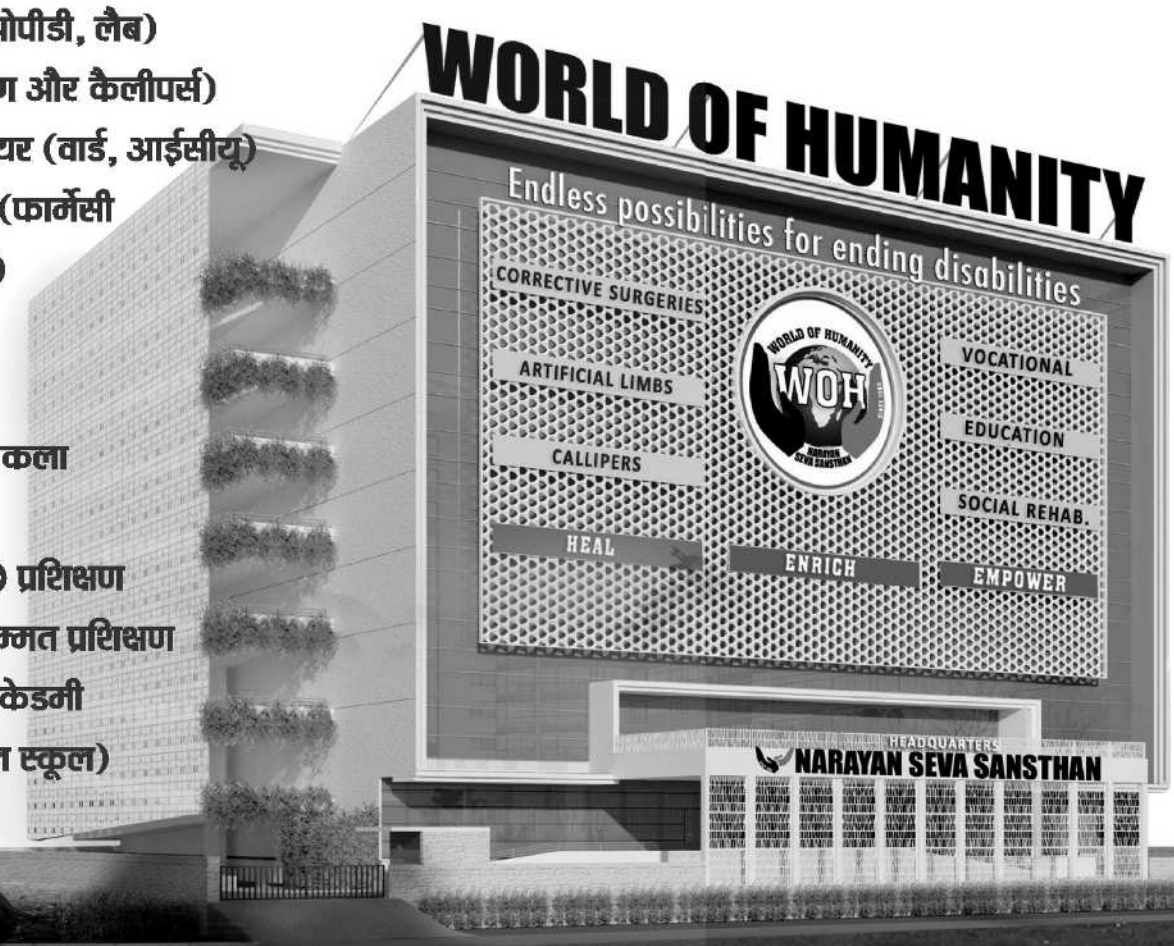


### सशक्तिकरण
- दिव्यांग शादी समारोह
- दिव्यांग हीरोज
- दिव्यांग खेल अकादमी
- दिव्यांग संगोष्ठी - सेमीनार
- इंटर्नशिप वॉलंटियर

### सामुदायिक सेवाएं
- आदिवासी और ग्रामीण शिक्षा
- वस्त्र वितरण
- दृश्य एवं श्रवण बाधित के लिए आवासीय विद्यालय
- भोजन सेवा
- राशन वितरण
- वस्त्र और कंबल वितरण
- दवा वितरण

○ 450 बेड का निःशुल्क सेवा हॉस्पीटल ○ 7 मंजिला अतिआधुनिक सर्वसुविधायुक्त
○ निःशुल्क शल्य चिकित्सा, जांचें, ओपीडी ○ निःशुल्क कृत्रिम अंग निर्माण कार्यशाला

○ प्रज्ञाचक्षु , विमंदित, मूकबधिर, अनाथ एवं निर्धन बच्चों का निःशुल्क आवासीय
○ व्यावसायिक प्रशिक्षण ○ बस स्टेण्ड से मात्र 700 मीटर दूर ○ रेल्वे स्टेशन से 1500 मीटर दूर

## संस्थान की आगामी पांच वर्ष : योजना

**1,40,400 शल्य चिकित्सा**
संस्थान द्वारा किये जाने वाले ऑपरेशन में 15 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि का लक्ष्य।

**1,87,200 सहायक उपकरण निर्माण एवं वितरण**
25 प्रतिशत सहायक उपकरण निर्माण एवं वितरण ज्यादा होगा।

**46,800 कृत्रिम अंग निर्माण एवं वितरण**
10 प्रतिशत कृत्रिम अंग ज्यादा बनायेंगे।

**510 दिव्यांग जोड़ों की बसेगी गृहस्थी**
सन 2026 तक 10 सामूहिक विवाह समारोह का होगा आयोजना।

**250 एनजीओ को लेंगे गोद**
प्रतिवर्ष 50 छोटी एनजीओ को देंगे आर्थिक मदद।

**एनसीए होगा उच्च माध्यमिक में क्रमोन्नत**
सन 2026 में प्रतिवर्ष 1000 निर्धन एवं आदिवासी बच्चे पढ़ेंगे।

**22,46,400 रोगियों की निःशुल्क फिजियोथैरेपी चिकित्सा**
25 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि की जायेगी।

**निःशुल्क मोबाईल रिपेयरिंग, सिलाई, कम्प्युटर एवं फिजियोथेरेपी केन्द्र का शुभारम्भ**
2026 के अंत तक संस्थान 82-82 अतिरिक्त केन्द्रों का संचालन करेगा।

**सम्पूर्ण भारत में 62 पी एण्ड ओ वर्कशॉप केन्द्र का शुभारम्भ**
2026 के अंत तक 62 केन्द्रों का अतिरिक्त संचालन किया जायेगा।

## प्रसन्नता प्रेम का झरना : कैलाश मानव

बड़ा– बड़ा वे डॉक्टर सेवाभावी आवे रे।
तन–मन–धन सूं सेवा करके, सबको सुखी बनावे रे।।

इसलिये आपका– हमारा जन्म हुआ है। जाघव केम्प से हमने यही सीखा। रामचरित मानस ने रास्ता बताया।

संत हृदय नवनीत समाना
कहा कबिन्ह परि कहै न जाना

आज से गांठ बांध लो। आपकी डायरी में लिख लो। नवनीत कहते है– मक्खन को। आपका दिल करुणावान होना चाहिये।

परिवर्तन पल–पल यहाँ,
आज वो कल नाहीं होय।
इस सृष्टि का कर्म यही, अब उठ काहे को सोय।।

बाबू, दान करने में भी आलस आ रहा है। आज नहीं करेंगे, कल नहीं तो परसों करेंगे। और दान ऐसी चीज है कि, पेट में भूख वे तो भूख तो बोल देवे कि– भूख लाग री, भूख लाग री। आपणो दान देणो है ईको ध्यान क्यूं नी आवे ?

एक शिष्य ने कहा– गुरूजी गुरुजी में इतना कोशिश करता हूँ भगवान नहीं मिलते। बोले– बेटा, पूरी कोशिश? पूरी कोशिश अपणे प्राण निचोड़ दिये। अपना शरीर सूखा दिया। सब कुछ किया, पर भगवान नहीं मिलते। गुरुजी मुस्करा दिये। प्रतिदिन गुरु– चेला स्नान को दोनों जाते थे। तालाब में दोनों खड़े थे जैसे ही शिष्य ने डुबकी लगाई। गुरुजी ने अपना हाथ ले के, अपने अंगूठे से उसके नाक को दबा दिया और दूसरे हाथ से माथे को दबा दिया। और तो चेलो तड़पे और दस– बीस सैकण्ड में कैसे न कैसे उछलकर के ऊपर आ गया। गुरुजी– गुरुजी दस सैकण्ड यदि आप नाक नहीं छोड़ते तो मर ही जाता। बेटा उस समय कैसा लगा? अरे गुरुजी कैसा लगा! बस कब तालाब के जल से बाहर आंऊ। कब मेरा मुण्डा जल के बाहर निकले? बोले जब भगवान के लिये उत्कण्ठा होगी। ऐसी जब अकुलाहट होगी, ऐसी जब भक्ति होगी, ऐसी जब श्रद्धा होगी। ये श्रद्धा की पारणी। ये पश्चाताप करनो नी, पश्चाताप करवा रो काम ही नी करनो। ना पूर्व ताप अच्छा ना पश्चाताप अच्छा। अपनी गलती सुधार लेना। कि हुई गलती नहीं दोहराने से मिट जाती है।

## सम्पादकीय

संसार में अनेक चमत्कार भरे पड़े हैं। प्रकृति स्वयं एक चमत्कारी शक्ति है। अनेक बार ऐसी–ऐसी प्राकृतिक घटनाएं हो जाती हैं जिन पर विश्वास करना कठिन होता है। ऐसे ही व्यक्तियों में भी बहुत सी चमत्कारी बातें होती हैं। एक कहावत है –'चमत्कार को नमस्कार।' संभवतः इसके कारण ही व्यक्ति चमत्कारों की ओर आकृष्ट हुआ हो, पर चमत्कार प्रारंभ से ही व्यक्ति को प्रभावित करते रहे हैं। तन की शक्ति में जब असीमितता हो तो भी वह चमत्कार सा ही लगता है। ऐसे ही कला व विज्ञान के सुन्दर सम्मिश्रण से अनेक लोग चमत्कारिक प्रदर्शन करते हैं। धर्म के क्षेत्र में भी भक्त चमत्कार के लिये उत्सुक व लालायित रहते हैं। चमत्कारों के नाम पर कई बार ठगी भी होती है। किन्तु सबसे बड़ा चमत्कार है मन का। मानव मन कब किससे बदल जाये, कब, कहाँ लग जाये कहा नहीं जा सकता।

यह पक्का है कि चमत्कार में विश्वास वाला धोखा भी खा सकता है, पर यदि हम किसी सिद्धांत, मान्यता, उद्देश्य या लक्ष्य पर विश्वासपूर्वक आगे बढ़ेंगे तो चमत्कार भी संभव है।

## कुछ काव्यमय

साचमत्कार
को नमस्कार है,
लोक मान्यता का विचार है।
चमत्कार हो सत्याधारित,
खोजें, क्या इसका आधार है?
सत्यासत्य खोजकर ही तो,
कहीं किया जा सकता विश्वास।
बिना प्रभावित हुए करें हम,
सत्य प्राप्ति के सहज प्रयास।

**- वरदीचन्द राव**

## इंडियन बैंक ने दी मदद

इंडियन बैंक की ओर से अपने 115 वें स्थापना दिवस पर सामाजिक उत्तरदायित्व (सी.एस.आर) परियोजना के तहत 9 अगस्त को विभिन्न दुर्घटनाओं में अपने हाथ–पांव गंवाने वाले 5 दिव्यांगों को आर्थिक सहयोग प्रदान कर संस्थान मुख्यालय पर कृत्रिम अंग लगवाए। इस दौरान बैंक के क्षेत्रीय प्रबन्धक श्री राजेन्द्र कुमार, उपप्रबन्धक श्री नवीन टांक एवं मुख्य प्रबन्धक श्री अनिल नेगी ने संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों का अवलोकन किया। निदेशक श्रीमती वंदना जी अग्रवाल ने उनका स्वागत किया। कृत्रिम अंग निर्माण प्रभाग के प्रभारी डॉ. मानस रंजन साहू ने उन्हें कृत्रिम अंग और कैलीपर निर्माण की विस्तार से जानकारी दी। इस अवसर पर बैंक के श्री विजय जैन, श्री अरूण कुमार तथा संस्थान के लेखाधिकारी श्री जितेन्द्र गौड़ व श्री संतोष सेनापति भी मौजूद थे।

अपनों से अपनी बात

# सादा जीवन–उच्च विचार

मनुष्य को अपनी जरूरतें अनावश्यक रूप से नहीं बढ़ानी चाहिए। सादगीपूर्ण जीवन ही मनुष्य को खुश रख सकता है। साथ ही हमें दूसरों के सुख–दुःख को भी सदा ध्यान रखना चाहिए।

इस माह राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर जी शास्त्री की देश जन्म जयंती मना रहा है। इन दोनों महापुरूषों को नमन करते हुए इनके जीवन के दो प्रसंग में आपसे साझा कर रहा हूँ। जिनका सार यह है कि मनुष्य को अपनी जरूरतें अनावश्यक रूप से नहीं बढ़ानी चाहिए। सादगीपूर्ण जीवन ही मनुष्य को खुश रख सकता है। साथ ही हमें दूसरों के सुख–दुःख का भी ध्यान रखना चाहिए। महात्मा गांधी साबरमती आश्रम में दिनभर का काम–काज निपटाने के बाद रात्रि में आश्रम का भ्रमण कर आश्रमवासियों से

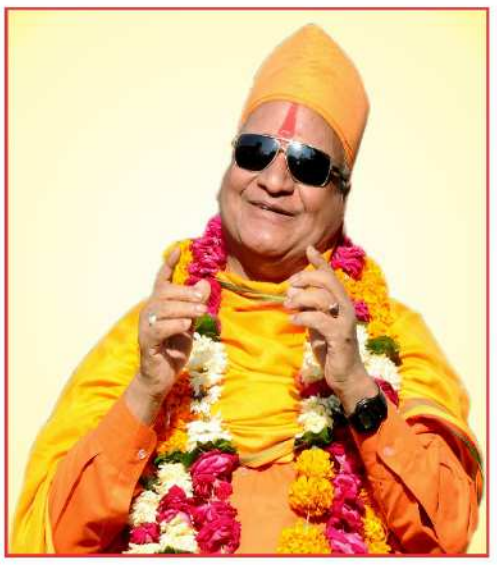

मिलना–जुलना करते थे। एक बार उन्होंने गोशाला में देखा कि एक गोसेवक कड़ाके की सर्दी में सोया ठिठुर रहा था। उसके पास ओढ़ने को पर्याप्त न था। गांधी जी को उसकी इस हालत ने विचलित कर दिया और तुरंत अपनी कुटियां में लौट आए और अपनी एक पुरानी धोती में पुराने कपड़े भर रजाई सिलने लगे। तभी उनकी धर्मपत्नी कस्तुरबा आई और पूछा 'ये क्या कर रहे हैं आप ?' उन्होंने सारी स्थिति बताई। कस्तुरबा ने कहा– 'आप कष्ट कर रहे हैं, मुझे कह दिया होता।' गांधी जी ने कहा तब मुझे शायद इतनी आत्मिक खुशी नहीं मिलती, जो अपने हाथों रजाई तैयार करने के बाद मिल रही है। इसी तरह लाल बहादुर शास्त्री जी यात्रा के लिए ट्रेन में बैठे ही थे कि उन्हें डिब्बे में ठंडक मससूस हुई। उन्होंने पूछा 'बाहर तो गर्मी है, यहां ठंडक कैसी ?' सहायक ने जवाब दिया –'आपके लिए एयरकंडीशनर लगाया गया है।' शास्त्री जी काफी नाराज हुए उन्होंने कहा कि देश के असंख्य लोग बिना एयर कंडीशनर डिब्बों में यात्रा कर रहे हैं तो मुझे कोई अधिकार नहीं है कि मैं अपने लिए इस तरह की सुविधा स्वीकार करूं। उन्होंने तत्काल एयरकंडीशनर हटवा कर ही आगे की यात्रा शुरू की।

**–कैलाश 'मानव'**

## नई सोच के साथ बनाएं लक्ष्य

अपने जीवन को समझना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। अगर हमने जीवन का महत्व समझ लिया तो यकीन मानिए जिन्दगी सुगम और सफल होने में कोई संदेह नहीं रहेगा। शास्त्रों का अध्ययन करें या ऋषियों– मुनियों को सुने, उन सबका कहना है–'मनुष्य की जिन्दगी पानी के बुलबुले जैसी है। न जाने कब बुलबुला फूट जाए।' यानी कब परलोक का बुलावा आ जाए, किसी को पता नहीं। अगर एक बार हमारी सांसें शरीर से छूट गई तो फिर लौटकर आने वाली नहीं। जीवन क्षणभंगुर है।

इसलिए हमें इसका सदुपयोग करना होगा।

नारायण सेवा संस्थान 23 अक्टूंबर, 1985 से बिना रुके सेवा के पथ पर बढ़ रहा है। दिव्यांगों और पीड़ित मानवता की सेवा करना इसका परम लक्ष्य है। संस्थान दिव्यांगों को सम्पूर्ण पुनर्वास देने का कार्य कर रहा है। 20 वर्षो से दिव्यांग एवं निर्धन सामूहिक विवाह के आयोजन करता आ रहा है। सितम्बर माह में 36वां सामूहिक विवाह सम्पन्न हुआ। जिसमें 21 जोड़ों का पाणिग्रहण शाही धूमधाम से हुआ। ऐसे आयोजनों से समाज को नई दिशा मिलती है। जिन दिव्यांगों के सपने साकार हुए उनके विचार सुनने से आंखे नम हो जाती हैं और लगता है कि उनके लिए हमारे प्रयास और तेज होने चाहिए।

समाज जिन्हें उपेक्षा भाव से देखता रहा है, वे असल में सामान्यजन से कतई कम नहीं हैं। समय–समय पर उन्होंने इसे साबित भी किया है। टोक्यों में सम्पन्न पैरालम्पिक–2021 में भारत के दिव्यांग युवाओं ने 5 स्वर्ण पदक सहित 19 विभिन्न पदक जीत कर कीर्तिमान स्थापित कर हम सबका ध्यान अपनी ओर खींचा है। ऐसे में सशक्त, समृद्ध भारत और उन्नत समाज बनाने के दिशा में हमें अपनी सोच और दृष्टि को बदलना ही होगा। संस्थान ने समाज कल्याण की योजनाओं को ज्यादा से ज्यादा दिव्यांग एंव जरूरतमंदों तक पहुंचाने के लिए पंचवर्षीय विजन डॉक्यूमेंट तैयार कर दृढ़ता से उस पर कार्य करने का संकल्प भी लिया हैं। यह संकल्प आपश्री के आशीर्वाद और सहयोग के बिना मूर्तरूप नहीं ले पाएगा। आइये, आप भी उसमें सदैव की तरह सहभागी बनें और भारत की आजादी के अमृत महोत्सव पर सेवा पथ की ओर तेजी से आगे बढ़ने की शपथ लें।

**– सेवक प्रशान्त भैया**

# एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

चैनराज लोढ़ा, कैलाश के पूर्व परिचित थे। उन्होंने कैलाश को मुम्बई बुलाया। दोनों मिलकर उस डॉक्टर के पास गये जिसने यह विज्ञापन दिया था। यह एक अस्पताल था जहां इस तरह क ऑपरेशन होते थे। प्रत्येक ऑपरेशन का मूल्य एक लाख रु. था। कैलाश ने डॉक्टर को कहा कि गांवों में ऐसे कई बच्चे हैं जिन्हें इस ऑपरेशन की आवश्यकता है, उनके पास खाने तक का पैसा नहीं है, इलाज तो बहुत दूर की बात है। ऐसे बच्चों का ऑपरेशन करवाने के लिये लोगों से चन्दा कर पैसा इकट्ठा करना पड़ेगा।

डॉक्टर, कैलाश व चैनराज की बातों से प्रभावित हो गया। उसके लिये यह घोर आश्चर्य का विषय था कि कोई गरीब आदिवासी बच्चों के इलाज के बारे में जानकारी प्राप्त करने इतनी दूर आया है और चन्दा कर उनके ऑपरेशन करवाने को तैयार है। डॉ. ने भी इन दोनों को आश्चर्य में डालते हुए कहा कि वह सिर्फ 8 हजार रु. में ऑपरेशन करने को तैयार है। डॉ. की पहल से दोनों प्रसन्न हो गये। अब उससे विनती की कि इतने बच्चों को जांच के लिये मुम्बई लाना तो संभव नहीं हो पायगा, अगर गांव में ही जांच शिविर लगा कर चयनित बच्चों का ऑपरेशन मुम्बई में करें तो क्या यह संभव हो पायेगा? डॉ. इसके लिये भी तैयार हो गया तो दोनों खुशी खुशी अस्पताल से लौटे और शिविर कहां लगाना, कैसे लगाना है इस बारे में विचार करने लगे।

चैनराज लोढ़ा घाणेराव सादड़ी के निवासी थे। उनकी इच्छा थी कि पहला शिविर उनके गांव में ही लगाया जाय। कैलाश को कोई आपत्ति नहीं थी, उसका तो मन इस बात से प्रसन्न हो रहा था कि वह सेवा के एक अभूतपूर्व, अनछुए पक्ष में पहल करने जा रहा था। शिविर की तिथियां तय कर आसपास के गांवों में प्रचार कर दिया।

**अंश - 157**

# आरोग्य का खजाना

बेल के फल का स्वास्थ्य में महत्वपूर्ण स्थान है। अनेक व्यक्ति गर्मियों में नियमित रूप से इसके रस का सेवन करते है। कलमी, सुपव्क, मधुर बेल के गूदे को सुबह मिट्टी के बर्तन में रखकर पानी में डाल दिया जाता है। तीन–चार घण्टे पानी बहुत ठंडा होता जाता है। पानी में बेल के गूदे को मिठास, रंग, स्वाद और सुगंध का पूरा प्रभाव उतर जाता है। इस पानी का सेवन स्वास्थ्यवर्धक है।

साधारण आहार के अलावा बेल के गूदे में एक विशेष धातु के गुण होते हैं। छाल और पत्तों के रस का जहां औषधियों में प्रयोग होता है, वहीं कच्चे फल के गूदे का अग्नि और मिट्टी के साथ अथवा सूखे गूदे को कांजी के मिश्रण के मध्य–रूप में प्रयोग किया जाता है। बेल के वृक्ष के मुख्य अवयव, जड़ के निकट की छाल का प्रसिद्ध मिश्रण 'वशमूल' में उपयोग किया जाता है। बेल की छाल, त्रिदोषनाशक (वात–पित्त–कफ) मिठी व हल्की होती है। बेल, भारी तथा पेट की अग्नि को तीव्र, तीखा, गर्मी बढ़ाने वाला तथा त्रिदोषनाशक होता है। कच्चे बेल की सूखी गिरी को कांजी में भिगोकर सेवन करने से चेहरे पर तेज आता है और दिल की बीमारियों में भी फायदा पहुंचता है। तेज बुखार में बेल के पत्तों को पीसकर सिर पर लेप करना फायदेमंद होता है। बुखार तथा सांस के रोग को नियंत्रित करने के लिए बेल की जड़ की छाल का काढ़ा पिलाना लाभप्रद होता है। तेज बुखार को कम करने के लिए बेलपत्र को गाढ़ा या बेलपत्र को पानी के साथ देना हितकर होता है।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

## अनुभव अमृतम्

**कुछ भी नहीं असंभव जग में,**
**सब संभव हो सकता है।**
**कार्य हेतु यदि कमर बाँध लो,**
**तो सब कुछ हो सकता है।**

परिवर्तन की हवा तो चलेगी ही। सुख–दुःख भी आयेंगे ही। हमें समभाव की साधना करनी है। वह समभाव ही हमारा साथी बनेगा। आपका समभाव आपके लिये और मेरा समभाव मेरे लिये साथी होगा। किसी का समभाव और किसी के काम का नहीं है। खुद करना पड़ेगा। मेरे एक मित्र ने कहा –कैलाश जी, मैं तैरना सीखना चाहता हूँ पर पानी में नहीं उतरूंगा यह शर्त है। अरे भैया, पानी में तो उतरना ही पड़ेगा। जीवन में भी कुछ पाना है तो स्वयं की अनुभूति और स्वयं का दर्शन करना होगा। तभी तो दिव्य दर्शन होगा। आप मरे बिना तो स्वर्ग भी नहीं दिखता है तो जीवन में सफलता यों ही थोड़े मिल जायेगी। पहले पुस्तकें घर से ही किराये पर देते थे, अब इस कार्य का विस्तार किया और रेलवे स्टेशन भीलवाड़ा के पास एक दुकान किराये ले ली। पुस्तकों की दुकान धड़ल्ले से चल निकली। जून, जुलाई, अगस्त में तो लाईनें लग जाती थीं। विद्यार्थियों के कोर्स की किताबों की बिक्री तब बहुत होती थी। उस समय अजमेर से पाठ्यपुस्तक मण्डल के गोदाम से पुस्तकें आती थीं। तब मेरे पास भगवतीलाल जी चौबीसा व अन्य दो–तीन सज्जन थे। श्री चौबीसा जी को रोज अजमेर भेजता था। वे प्रतिदिन पाठ्यपुस्तक मण्डल जाकर चालान कटाते और जो पुस्तकें वहाँ उपलब्ध होती वो लेकर आ जाते। भीलवाड़ा में और भी कई दुकानें थी पुस्तकों की किन्तु संभवतः वे डेली किसी को नहीं भेजते होंगे, इसलिये मेरी दुकान पर बहुत भीड़ रहती थी। पुस्तकों की छपाई मांग के अनुसार न होने से शोर्टेज बनी रहती थी। कभी कोई पुस्तक आती, कभी कोई कम पड़ जाती पर सबसे ज्यादा भरोसेमंद मेरी पुस्तकों की दुकान हो गई थी।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 283 (कैलाश 'मानव')


## दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

**कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..**

**जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि**

| ऑपरेशन संख्या | सहयोग राशि | ऑपरेशन संख्या | सहयोग राशि |
|---|---|---|---|
| 501 ऑपरेशन के लिए | 17,00,000 | 40 ऑपरेशन के लिए | 1,51,000 |
| 401 ऑपरेशन के लिए | 14,01,000 | 13 ऑपरेशन के लिए | 52,500 |
| 301 ऑपरेशन के लिए | 10,51,000 | 5 ऑपरेशन के लिए | 21,000 |
| 201 ऑपरेशन के लिए | 07,11,000 | 3 ऑपरेशन के लिए | 13,000 |
| 101 ऑपरेशन के लिए | 03,61,000 | 1 ऑपरेशन के लिए | 5000 |

**निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला**

**आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति**

**( वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें )**

| | |
|---|---|
| नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि | 37000/- |
| दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि | 30000/- |
| एक समय के भोजन की सहयोग राशि | 15000/- |
| नाश्ता सहयोग राशि | 7000/- |

**दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार**

| वस्तु | सहयोग राशि (एक नग) | सहयोग राशि (तीन नग) | सहयोग राशि (पाँच नग) | सहयोग राशि (ग्यारह नग) |
|---|---|---|---|---|
| तिपहिया साईकिल | 5000 | 15,000 | 25,000 | 55,000 |
| व्हील चेयर | 4000 | 12,000 | 20,000 | 44,000 |
| केलीपर | 2000 | 6,000 | 10,000 | 22,000 |
| वैशाखी | 500 | 1,500 | 2,500 | 5,500 |
| कृत्रिम हाथ/पैर | 5100 | 15,300 | 25,500 | 56,100 |

**गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर**

**मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि**

| | |
|---|---|
| 1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500 | 3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500 |
| 5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500 | 10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000 |
| 20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000 | 30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000 |

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें
मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999
आपके अपने संस्थान का पता
नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

**अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान**

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से
संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर
सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।
संस्थान पैन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टैन नम्बर JDHN01027F

| Bank Name | Branch Address | RTGS/NEFT Code | Account |
|---|---|---|---|
| State Bank of India | H.M.Sector-4 | SBIN0011406 | 31505501196 |
| ICICI Bank | Madhuban | ICIC0000045 | 004501000829 |
| Punjab National Bank | KalajiGoraji | PUNB0297300 | 2973000100029801 |
| Union Bank of India | Udaipur Main | UBIN0531014 | 310102050000148 |

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम
1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।


मन के जीते जीत सदा ( दैनिक समाचार-पत्र ) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर ( राज. ) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर ( राज. ) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023